प्रेमचंद्र के 'रंगभूमि' में लोकसंघर्ष और पूंजीवादी व्यवस्था व बदलाव की महान गाथा

रोहित कुमार (शोधार्थी)

तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर मध्य प्रदेश

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद (1880-1936) का पूर्ण कथा साहित्य, भारतीयों की आम जनमानस की गाथा है। विषय, मानवीय भावना और समय के अनंत विस्तार तक जाती इनकी रचनाएँ इतिहास की सीमाओं को तोड़ती हैं, और कालजयी कृतियों में गिनी जाती हैं। रंगभूमि (1924-1925) उपन्यास ऐसी ही कृति है। नौकरशाही तथा पूंजीवादी के साथ लोकसंघर्ष का ताण्डव, सत्य, निष्ठा और अहिंसा के प्रति आग्रह, ग्रामीण जीवन तथा स्त्री दुर्दशा का भयावह चित्र यहाँ अंकित है. परतंत्र भारत की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक समस्याओं के बीच राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण यह उपन्यास लेखक के राष्ट्रीय दृष्टिकोण को बहुत ऊँचा उठाता है. देश की नवीन आवश्यकताओं, आशाओं की पूर्ति के लिए संकीर्णता और वासनाओं से ऊपर उठकर निःस्वार्थ भाव से देश सेवा की आवश्यकता उन दिनों सिद्दत से महसूस की जा रही थी. रंगभूमि की पूरी कथा इन्हीं भावनाओं और विचारों में विचरती है. कथा का नायक सूरदास का पूरा जीवनक्रम, यहाँ तक कि उसकी मृत्यु भी राष्ट्रनायक की छवि लगती है. पूरी कथा गाँधी दर्शन, निष्काम कर्म और सत्य के अवलंबन को रेखांकित करती है. यह संग्रहणीय पुस्तक कई अर्थों में भारतीय साहित्य की धरोहर है। कहानी में सूरदास के अलावा सोफी, विनय, जॉन सेवक, प्रभु सेवक का किरदार भी अहम है. सोफी मिसेज जॉन सेवक, ताहिर अली, रानी, डाक्टर गांगुली, क्लार्क, राजा साहब, इंदु, ईश्वर सेवक, राजा महेंद्र कुमार सिंह, नायकरामघीसू, बजगंरी, जमुनी, जाह्नवी, ठाकुरदीन, भैरों जैसे कईं किरदार हैं.

शहर अमीरों के रहने और क्रय-विक्रय का स्थान है. उसके बाहर की भूमि उनके मनोरंजन और विनोद की जगह है. उसके मध्य भाग में उनके लड़कों की पाठशालाएं और उनके मुकदमे बाजी के अखाड़े होते हैं, जहाँ न्याय के बहाने गरीबों का गला घोंटा जाता है. शहर के आस-पास गरीबों की बस्तियाँ होती हैं। बनारस में पांडेपुर ऐसी ही बस्ती है. वहां न शहरी दीपकों की ज्योति पहुंचती है, न शहरी छिड़काव के छींटे. दो-चार बिगड़े सफेदपोशों के भी हैं, जिन्हें उनकी हीनावस्था ने शहर से निर्वासित कर दिया है. इन्हीं में एक गरीब और अंधा चमार रहता है, जिसे लोग सूरदास कहते हैं. उनके गुण और स्वभाव भी जगत प्रसिद्ध हैं- गाने-बजाने में विशेष रुचि, हृदय में विशेष अनुराग, अध्यात्म और भक्ति में विशेष प्रेम, उनके स्वाभाविक लक्षण हैं. सूरदास एक बहुत ही क्षीणकाय, दुर्बल और सरल व्यक्ति था. पैदल चलने वालों को वह अपनी जगह पर बैठे-बैठे दुआएं देता था , लेकिन जब कोई इक्का आ निकलता, तो वह उसके पीछे दौड़ने लगता वहीं मिस सोफिया बड़ी-बड़ी रसीली आंखों वाली, लज्जाशील युवती है. देहअति कोमल, माने पंचभूतों की जगह पुष्पों से उसकी सृष्टि हुई हो. रूप अति सौम्य, मानो लज्जा और विनय मूर्तिमान हो गए हों. सिर से पांव तक चेतना ही चेतना थी. जड़ का कहीं आभास तक न था. वह धर्म पर विश्वास करती थी लेकिन अंधविश्वास पर नहीं. इसका यह कथन कि महात्मा ईसा के प्रति कभी मेरे मुँह से कोई अनुचित शब्द नहीं निकला. मैं उन्हें धर्म, त्याग और सद् विचार का अवतार समझती हूँ! लेकिन उनके प्रति श्रध्दा रखने का यह आशय नहीं है कि भक्तों ने उनके उपदेशों में जो असंगत बातें भर दी हैं या उनके नाम से जो विभूतियाँ प्रसिद्ध कर रखी हैं, उन पर भी ईमान लाऊँ! और, यह अनर्थ कुछ प्रभु मसीह ही के साथ नहीं किया गया, संसार के सभी महात्माओं के साथ यही अनर्थ किया गया. यह स्पष्ट होता है कि वह ऐसी लड़की नहीं थी कि जो समाज की सड़ीगली या थोपे गए मतों पर विश्वास करे.

रंगभूमि में कहानी स्वतंत्रता आंदोलन की, संघर्ष की. अपनी कर्मभूमि में अपने कर्तव्य की.

तू रंगभूमि में आया, दिखलाने अपनी माया,

क्यों धरम-नीति को तोड़ै? भई, क्यों रन से मुँह मोड़ै?

काहनी के नायक सूरदास की इन पंक्तियों में सच्चाई है। यह जिंदगी की सच्चाइयों से वाकिफ कराती है. इंसान चाहे किसी भी हालत में हो उसे रंगभूमि में आकर कर्म करना पड़ता है और जो नीति और धर्म से मुँह मोड़ता है उसे दुत्कार ही मिलती है. सोफी-विनय के प्रेम की गाथा सोफी और विनय का मिलन जाति भेद के कारण लगभग असंभव था . उनका

प्रेम शाश्वत था. तमाम संघर्षों के बावजूद वो एक दूसरे से प्रेम करते रहे. कारागार में विनय से मिलने आई सोफी की इन बातों से यह स्पष्ट हुआ है कि अपनी त्रुटियों और दोषों का प्रदर्शन करके तुमने मुझे और भी वशीभूत कर लिया। तुम मुझसे डरते हो, इसलिए तुम्हारे सम्मुख न आऊँगी, पर रहूँगी तुम्हारे ही साथ. जहाँ-जहाँ तुम जाओगे, मैं परछाईं की भाँति तुम्हारे साथ रहूँगी. प्रेम एक भावनागत विषय है, भावना से ही उसका पोषण होता है, भावना ही से वह जीवित रहता है और भावना से ही लुप्त हो जाता है. वह भौतिक वस्तु नहीं है. तुम मेरे हो, यह विश्वास मेरे प्रेम को सजीव और तृष्णा रखने के लिए काफी है।

जिस दिन इस विश्वास की जड़ हिल जाएगी, उसी दिन इस जीवन का अंत हो जाएगा. अगर तुमने यही निश्चय किया है कि इस कारागार में रहकर तुम अपने जीवन के उद्देश्य को अधिक सफलता के साथ पूरा कर सकते हो, तो इस फैसले के आगे सिर झुकाती हूँ. इस विराग ने मेरी दृष्टि में तुम्हारे आदर को कई गुना बढ़ा दिया है.

सोफी की मृत्यु की अफवाह प्रसारित होने के बाद विनय का उसे ढूंढ निकालना भी शाश्वत प्रेम का प्रतीक है।

वीरपाल महाराज , आप तो कई महीनों से इस इलाके में हैं,क्या आपको इन लोगों की करतूतें मालूम नहीं है ? ये लोग प्रजा को दोनों हाथों से लूट रहें हैं । इनमें न तो दया है न धर्म । ये हमारे भाई बंदे ही हैं जो हमारी गर्दन पर छुरी चलाते हैं।

अब आपसे क्या परदा है। सचमुच यही हाल है हम लोग तो टके के मुलाजिम ठहरे चार पैसे ऊपर से न कमाएं तो बाल बच्चों को कैसे पालें ,तलब है वह साल साल तक भर नहीं मिलती , यहां तो जितने ही ऊंचे ओहदे पर है ,उसका पेट भी उतना ही बड़ा है।

यहां के न्यायालयों से न्याय की आशा रखना चिड़िया से दूध निकलना है। हम सब के सब इन्हीं अदालतों के मारे हुए हैं मैंने कोई अपराध नहीं किया था।

मैं अपने गांव का मुखिया था ,किंतु मेरी सारी जायदाद इसलिए जब्त कर ली गई कि मैंने एक युवती को इलाकेदार के हाथों से बचाया था । बस इलाकेदार उसी दिन से मेरा जानी दुश्मन हो गया । मुझ पर चोरी का अभियोग लगवाकर कैद करा दिया। अदालत अंधी थी ,जैसा इलाकेदार ने कहा ,वैसा न्यायाधीश ने किया । ऐसी अदालतों से आप व्यर्थ न्याय की आशा रखते हैं।

दीवान साहब - मुझे मालूम हुआ कि आप भरत सिंह के सुपुत्र हैं। उनसे मेरा पुराना परिचय है। अब वह शायद मुझे भूल गए हों। कुछ तो इस नाते से कि आप मेरे पुराने मित्र के बेटे हैं और कुछ इस नाते से कि आपने इस युवावस्था में विषय वासनाओं को त्यागकर लोक सेवा

का व्रत धारण किया है , मेरे दिल में आपके प्रति विशेष प्रेम और सम्मान है । व्यक्तिगत रूप से में आपकी सेवाओं को स्वीकार करता हूं और इस थोड़े से समय में आपने रियासत का जो कल्याण किया है। उसके लिए आपका कृतज्ञ हूं। मुझे खूब मालूम है कि आप निरपराध हैं और डाकुओं से आपका कोई संबंध नहीं हो सकता।

विनय ने अपने उठते हुए क्रोध को दबाकर कहा - आपने मेरे विषय में जो सद्भाव प्रकट किए हैं उनके लिए आपका कृतज्ञ हूं पर खेद है कि मैं आपकी आज्ञा का पालन नहीं कर सकता। समाज की सेवा करना ही मेरे जीवन का मुख्य उद्देश्य है और समाज से पृथक होकर मैं अपना व्रत भंग करने में असमर्थ हूं।

रंगभूमि में औद्योगिक विकास के होने से कुप्रभाव, ग्रामीण लोगों में ब्याज की समस्या, पूंजीपति वर्ग द्वारा अनैतिक कार्य और कर्मचारियों के ऊपर भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण किया है जो हमारे भारतीय समाज की राजनैतिक और आर्थिक समस्या को प्रतिबिंबित किया है। इसके अलावा भारतीय लोक समाज में दो वर्ग हैं एक तो वह वर्ग जो अमीर है और दूसरा वह वर्ग जो गरीब है ऐसी स्थितियों और परिस्थितियों का चित्रण प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यास के माध्यम से अवगत कराया है।

इन्होंने मिसेज सेवक के द्वारा कुंवर साहब के महल का वर्णन किया है " भवन क्या था,आमोद,विलास,रसज्ञता और वैभव का क्रीड़ा स्थल था संगमरमर के फर्श पर बहु मूल्यवान कालीनों को बिछाया गया था , चलते समय उनमें लोगों के पैर धंस जाते थे

सूरदास ग्रामीण सभ्यता का वह दस्तावेज है जो मात्र अकेला झोपड़ी में जीवन गुजर बसर कर रहा था और अपने आपको भिक्षुक बनकर भीख मांगकर अपना पेट भर रहा था । आर्थिक समस्या पूर्ण उपन्यास में भलीभांति देखी जाती है लेकिन सूरदास इस अंतर्विरोध से टकराता है वह भ्रष्टाचार से कभी भी समझौता नहीं करता। वह अपने जीवन को रंगभूमि मानता है इस पर अपना खेल खेलता है। संघर्ष में हर बार हारता है,पर उसकी निगाह उतनी ही बार जीत पर रहती हैं।

सूरदास आत्मप्रतिष्ठा का लोभी नहीं है वह कहता है कि अंधेरा है कि हम जो सत्तर पीढ़ियों से यहां आबाद हैं, निकाल दिया जाए और दूसरे यहां आकर बस जाएं। यह हमारा घर है,किसी के कहने से नहीं छोड़ सकते । यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि लड़ाई कितनी अहम है और इसका राष्ट्रवादी आधार सामाजिक और आर्थिक स्तर पर कितना व्यापक है। यह पूरे देश की बात है यह सिर्फ सूरदास की दस बीघा जमीन की नहीं।

सन 24 का जमाना था । आप लखनऊ में " रंगभूमि" छप रही थी । अलवर रियासत से राजा साहब की चिट्ठी लेकर पांच छः सज्जन आए। राजा साहब ने अपने पास रहने के लिए बुलाया था । राजा साहब उपन्यास, कहानी के शौकीन थे। राजा साहब ने 400 रुपए प्रतिमास नक़द ,मोटर, बंगला देने को लिखा था । सपरिवार बुलाया था ।उन महाशयों यह कहकर कि मैं बहुत बागी आदमी हूं , इसी वजह से मैंने सरकारी नौकरी छोड़ी है, राजा साहब को एक खत लिखा " मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे याद किया। मैंने अपना जीवन साहित्य सेवा के लिए लगा दिया है। मैं जो कुछ लिखता हूं , उसे आप पढ़ते हैं ,इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं । आप जो पद मुझे दे रहे हैं, मैं उसके योग्य नहीं हूं। मैं इतने में ही अपना सौभाग्य समझता हूं कि आप मेरे लिखे को ध्यान से पढ़ते हैं ।

रंगभूमि में प्रेमचंद्र ने विदेशियों द्वारा औद्योगिक, पूंजीवाद,भ्रष्टाचार जैसी नीतियों का खुलकर वर्णन किया है तथा भारतीय समाज को इनसे बचने के लिए आगाह किया है। स्वंत्रता से पूर्व भारतीय समाज में अंग्रेजों, पूंजीवादियों, महाजनों तथा सामंतों द्वारा अत्यधिक शोषण हुआ है। इस आर्थिक दुरावस्था के कारण शोषण के रूप में पूंजीपति, सरकार,उद्योगपति,राजनेता,कर्मचारी, अधिकारी तथा समाज के मुखिया उपन्यास में उभरकर सामने आए हैं।

भोजन की तृष्णा में व्यक्ति मजबूरन अपनी भावनाओं कुचलता है और शोषण का शिकार बनता है। परिणाम स्वरूप आर्थिक विषमता की जड़ें अधिक मजबूत बनती जाती हैं। पूंजीपति दिन प्रतिदिन आर्थिक दृष्टि से बलशाली बनते गए और भारतीय गरीब समाज को पराधीनता की बेड़ियों में कसते गए। प्रेमचंद ने एक सच्चे देशभक्त के रूप में भारतीय समाज की डूबने से बचाया है।

ब्रिटिश शासकों की कूटनीतियों से समयबद्ध ग्रामीणों को जागृत किया है जिसे राष्ट्रीय मुक्त आंदोलन को क्रांतिकारी स्वर मिला है।

संदर्भ

1- मुंशी प्रेमचंद,रंगभूमि,प्रभात प्रकाशन दिल्ली,पृष्ठ संख्या 1

2- वही,पृष्ठ संख्या 13

3- वही, पृष्ठ संख्या 14

4- वही , पृष्ठ संख्या 237

5- वही, पृष्ठ संख्या 239

6- वही, पृष्ठ संख्या 245

7- वही , पृष्ठ संख्या 248

8- वही, पृष्ठ संख्या 249

9- हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेमचंद्र, मदन गोपाल

10- प्रेमचंद साहित्यिक विवेचन, शिवकुमारी मिश्रा

11- प्रेमचंद्र का कथा संसार, संपादक डॉक्टर नरेंद्र मोहन

12- शिवरानी देवी , प्रेमचंद्र घर में, नई किताब प्रकाशन , प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या 81